उ०प्र० कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. Council of Agricultural Research
अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226010
8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्र संख्याः 1081/एन०आर०एम०/सी०डब्ल्यू०डब्ल्यू०जी०/2011–12 दिनॉकः 02.02.2012

दिनांक : 01 फरवरी, 2012
समय : 11:00 बजे
स्थान : उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद सभाकक्ष
उपस्थितिः संलग्नक

फसल मौसम सतर्कता समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की तेईसवीं बैठक की संस्तुतियाँ

क्राप वेदर वाच ग्रुप की वर्ष 2011–12 की तेईसवीं बैठक श्री प्रद्युम्न त्रिपाठी, सचिव, उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनॉक 01 फरवरी, 2012 को उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में न0 दे0 कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद, च0शे0आ0 कृषि प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के फसल एवं मौसम वैज्ञानिक, कृषि विभाग, मत्स्य विभाग, रिमोट सेसिंग अप्लीकेशन सेन्टर, लखनऊ, विशेष आमन्त्री डा0 शालिनी सिंह विसेन, पादप रोग वैज्ञानिक तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार इस सप्ताह (दिनॉक 01 फरवरी से 07 फरवरी, 2012 तक) प्रदेश के सभी अंचलों में आसमान साफ रहेगा जिससे वर्षा की कोई संभावना नहीं है। प्रदेश के सभी अंचलों में इस सप्ताह मुख्यतया 3 दिन उत्तरी पश्चिमी एवं 4 दिन दक्षिणी पूर्वी हवायें सामान्य अथवा थोड़ी अधिक गति (3–4 किमी0/घण्टा) से चलने के आसार है। वातावरण में सापेक्षिक आद्रता पूर्वी अंचलों, मध्यांचल तथा बुन्देलखण्ड क्षेत्र में 45–85 प्रतिशत रहने के आसार है। अधिकतम तापमान 22–24 डिग्री0 सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान पश्चिमांचल को छोड़कर 06–09 डिग्री0 सेल्सियस के मध्य रहने के आसार है जो सामान्य के करीब है। कुल मिलाकर इस सप्ताह प्रदेश में वातावरण शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क रहेगा।

कृषि विभाग उ0 प्र0 से प्राप्त ऑकड़ों के अनुसार दिनांक 14.01.2012 तक प्रदेश में रबी फसलों का कुल आच्छादन लक्ष्य 125.67 लाख हे0 के सापेक्ष 126.59 लाख हे0 (100.73 प्रतिशत) हुआ है, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में 127.10 लाख हे0 अर्थात 100.85 प्रतिशत आच्छादन हुआ था। इस वर्ष प्रदेश में गेहूँ का आच्छादन लक्ष्य 95.00 लाख हे0 है जिसके सापेक्ष अभी तक 95.31 लाख हे0 में बुआई हुई है। तिलहनी फसलों में तोरिया की बुआई इस अवधि तक 4.25 लाख हे0 लक्ष्य के सापेक्ष 3.91 लाख हे0 मे हुई है जो लक्ष्य का 92.03 प्रतिशत है तथा सरसों की बुआई 5.66 लाख हे0 लक्ष्य के सापेक्ष 6.65 लाख हे0 में हुई है जो लक्ष्य का 117.43 प्रतिशत है। दलहनी फसलों में चने की बुआई लक्ष्य 8.40 लाख हे0 के सापेक्ष 8.33 लाख हे0 हो चुकी है, जो लक्ष्य का 99.16 प्रतिशत है। मटर एवं मसूर की बुआई लक्ष्य के सापेक्ष क्रमशः 116.78 एवं 93.24 प्रतिशत हो चुकी है।

प्रदेश में मौसम के इस परिप्रेक्ष्य में किसानों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

गेहूँ की खेती

- कल्ले निकलते समय गेहूँ की दूसरी सिंचाई तथा गाठें बनते समय तीसरी सिंचाई करें।
- दोमट भूमि में विलम्ब से बुआई वाले क्षेत्रों में नत्रजन की एक चौथाई मात्रा सिंचाई के बाद ओट आने पर दें। हल्की मृदा (बलुई दोमट) में नत्रजन की शेष मात्रा का आधा भाग दूसरी सिंचाई के बाद ओट आने पर दें।

- यदि खरपतवार निकाई–गुड़ाई से नियंत्रित न हो रहे हो तो चौड़ी पत्ती वाले खपतवारों जैसे बथुआ, सत्यानाशी, हिरन खुरी, कृष्णनील गजरी, प्याजी के नियंत्रण हेतु 2,4 डी सोडियम साल्ट, 80 प्रतिशत 625 ग्रा0/हे0 की या मेटा सल्फ्यूरान मिथाइल 20 प्रतिशत डब्लू0 पी0 की 20 ग्रा0/हे0 तथा सकरी पत्ती जैसे गेहूँसा व जंगली जई के नियंत्रण हेतु आइसोप्रोट्यूरान 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 1.25 किग्रा0/हे0 या सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 33 ग्रा0/हे0 मात्रा 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर चपटे नॉजिल वाले स्प्रेयर से बुआई के 25–30 दिन बाद छिड़काव करें।
- सकरी एवं चौड़ी पत्ती दोनो प्रकार के खरपतवारों के एक साथ नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 33 ग्रा0/हे0 या मेट्रीब्यूजिन 70 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 250 ग्रा0/हे0 बुआई के 20–25 दिन बाद लगभग 500–600 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- गेरूई तथा पत्ती धब्बा रोग के लक्षण दिखाई देने पर नियंत्रण हेतु थायोफिनेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 700 ग्रा0 अथवा जीरम 80 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 2.0 किग्रा0 अथवा मैकोजेब 75 डब्लू0पी0 की 2.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से लगभग 750 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- पीली गेरूई का प्रकोप होने पर प्रोपीकोनाजोल 25 प्रतिशत ई.सी. की 500 मिली0/हे0 लगभग 750 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।

दलहनी फसलों की खेती

चना

- फली छेदक एवं सेमी लूपर कीट की रोकथाम के लिये इस रोग से ग्रसित मृत 250 सूड़ियों का रस (एन.पी.बी.) 200 से 300 लीटर पानी में मिलाकर 0.5 प्रतिशत गुड़ के साथ प्रति 1 सूड़ी 10 पौधे दिखाई पड़ने पर छिड़काव करें अथवा उपचार हेतु 50 ई.सी. 2.00 ली0 मैलाथियान या क्यूनालफास 25 ई.सी. का 2.0 लीटर प्रति हे0 की दर से 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मटर की खेती

- अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा एवं तुलासिता रोग के नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 75 डब्लू0पी0 की 2 किग्रा0 अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 2 किग्रा0 अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 3 किग्रा0 मात्रा प्रति हे0 लगभग 500–600 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।
- बुकनी रोग के नियंत्रण हेतु घुलनशील गन्धक 80 प्रतिशत 2 किग्रा0 अथवा ट्राइडोमार्फ 80 प्रतिशत ई0सी0 500 मिली0 प्रति हे0 लगभग 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- फली बेधक कीट एवं सेमीलूपर कीट का प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) की कर्स्टकी प्रजाति 1.0 किग्रा0 अथवा फेनवैलरेट 20 प्रतिशत ई0सी0 1 ली0 अथवा मोनोक्रोटोफास 36 प्रतिशत एस0एल0 1 ली0 (सब्जी मटर हेतु प्रतिबन्धित) जैविक/रासायनिक कीटनाशको का बुरकाव अथवा 500–600 ली0 में पानी में घोलकर प्रति हे0 छिड़काव करना चाहिए।

अरहर की खेती

- फलीबेधक कीट की रोकथाम हेतु मोनोक्रोटोफॉस (36 ई.सी.) 1000 मि0 ली0 प्रति हे0 या निबोली 6 प्रतिशत + 1 प्रतिशत साबुन के घोल का छिड़काव करें।